This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

7742 **A**

M.A. (एम. ए.)/I

HINDI (हिन्दी)—Course 2 (प्रश्न-पत्र 2)

(भक्तिकालीन काव्य)

(प्रवेश-वर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक** : 50

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक एम. ए. हिन्दी परीक्षा वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फार्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य हैं। वर्ग 'अ' (पूर्व नियमित विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. "यद्यपि कबीर पढ़े लिखे न थे पर उनकी प्रतिभा बड़ी प्रखर थी।" इस कथन के आलोक में कबीर के कवि-व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

कबीर की काव्य-भाषा को सधुक्कड़ी कहना कहाँ तक उचित है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[P.T.O.

2. "अवधी भाषा की अद्‌भुत शक्ति जायसी की पहली विशेषता है।" इस कथन के संदर्भ में 'पद्‌मावत' की भाषा के वैशिष्ट्य् का उद्‌घाटन कीजिए। 12

अथवा

"सूर का वियोग-वर्णन वियोग वर्णन के लिए ही है, परिस्थिति के अनुरोध से नहीं।" भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3. "रचना-कौशल, प्रबंध-पटुता, सहृदयता इत्यादि सब गुणों का समाहार हमें रामचरित्र मानस में मिलता है" इस कथन को दृष्टि-पथ में रखते हुए 'अयोध्या कांड' की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 12

अथवा

अयोध्याकांड में वर्णित राम की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया। राम बड़े मैं तनक लहुरिया।।

किएउं सिंगार मिलन कै तांईं । हरि न मिले जग जीवन गुसांईं।।

धनि पिउ एकै संग बसेरा । सेज एक पै मिलन दुहेरा।।

धन्नि सुहागिनि जो पिय भावै। कह कबीर फिरि जनमि न आवै।। 7

अथवा

दिन दस पाँच तहाँ जो भए। राजा कतहुँ अहेरें गए।।

नागमती रूपवंती रानी। सब रनिवास पाट परधानी।।

कै सिंगार दरपन कर लीन्हा। दरसन देखि गरब जियँ कीन्हा।।

भलेहि सो और पिआरी नाहाँ। मोरे रूप की कोई जग माहाँ।।

हँसत सुआ पहँ आइ सो नारी। दीन्ह कसौटी औ बनवारी।।

सुआ बान दहुँ कहु कसि सोना। सिंघल दीप तोर कस लोना।।

कौन दिस्टि तोरी रूपमनी। दहुँ हौं लोनि कि वै पदुमिनी।।

जौं न कहसि सत सुअटा तोहि राजा कै आन।

है कोइ एहि जगत महँ मोरें रूप समान।।

(ख) जोग ठगौरी ब्रज न बिकहैं।

यह ब्योपार तिहारो ऊधो ऐसोई फिर जैहै।।

जापै लै आए हौ मधुकर ताके उर न समैहै।।

दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहैं?

मूरी के पातन के केना की मुक्ताहल दैहै।

सूरदास प्रभु गुनहिं छाँड़ि कै को निर्गुन निरबैहै।। 7

अथवा

केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई।
मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि बिषम भाँति निहारई।।
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरू देखई।
तुलसी नृपति भवनव्यता बस काम कौतुक लेखई।।